महत्वपूर्ण एवं खास

कोई भी दोषी नहीं

स्पेशल एनआईए कोर्ट ने सोमवार को मक्का मस्जिद ब्लास्ट मामले में सभी पांच आरोपियों को बरी कर दिया। 18 मई 2007 को हैदराबाद की इस प्रमुख मस्जिद में जुमे की नमाज के दौरान हुए विस्फोट में 9 लोग मारे गए थे और 58 घायल हुए थे। इसके कुछ ही देर बाद उग्र भीड़ को काबू करने की कोशिश में हुई पुलिस फायरिंग में पांच और लोगों की जान चली गई थी। इतने संवेदनशील मामले में सारे आरोपियों का सबूत के अभाव में बरी हो जाना हमारी जांच एजेंसियों की क्षमता पर गंभीर सवाल खड़े करता है। यह अपनी तरह का अकेला मामला नहीं है। मालेगांव ब्लास्ट, समझौता एक्सप्रेस ब्लास्ट और मक्का मस्जिद ब्लास्ट- कुछ महीनों के अंतराल पर हुए ये तीन आतंकी हमले इस मायने में विशिष्ट थे कि तीनों में दक्षिणपंथी उग्रवादी संगठन अभिनव भारत का नाम सामने आया था। स्वाभाविक रूप से इन मामलों पर भारत ही नहीं, पूरी दुनिया की नजरें टिकी थीं। बावजूद इसके, इन तीनों मामलों में न केवल जांच की रफ्तार सुस्त रही बल्कि इसकी लाइन भी बदलती रही और जांच की एजेंसियां भी। मालेगांव ब्लास्ट में तो खुद सरकारी वकील एनआईए पर आरोपियों के खिलाफ जान-बूझकर ढीला रुख अपनाने का आरोप लगा चुकी हैं। बहरहाल, सारी आशंकाएं निर्मूल मान ली जातीं, बशर्ते मुकदमा अपनी तार्किक परिणति तक पहुंचता प्रतीत होता। मगर हम देख रहे हैं कि स्थानीय पुलिस, सीबीआई और एनआईए- इन तीनों एजेंसियों से गुजरते हुए 11 साल बाद मामला जब फैसले के मुकाम तक पहुंचा तो अदालत इसी नतीजे पर पहुंची कि उसे सबूत नहीं मुहैया कराए गए। यानी सीधा सवाल जांच एजेंसियों की गुणवत्ता पर है। क्या जांच के दौरान उन्हें एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि जिन्हें उन्होंने पकड़ा है, उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं हैं, लिहाजा उन्हें इस संभावना पर भी काम करना चाहिए कि कहीं वास्तविक अपराधी उनकी पहुंच से दूर न जा रहे हों अगर ऐसा था तो जांच की कोई और लाइन पकड़ने से उनको किसने रोका था दूसरी संभावना यह हो सकती है कि एजेंसियों ने वास्तविक अपराधियों को ही पकड़ा था, लेकिन उनके खिलाफ ठोस सबूत ढूंढना उनके अजेंडे पर ही नहीं आ पाया। अगर ऐसा है तो यह कहीं ज्यादा गंभीर मामला है और इसके नुकसान इस देश को बाद में भी उठाने पड़ेंगे। इतने सारे निर्दोष लोगों की हत्याओं की सजा किसी को भी न मिले, यह खुद में इतना बड़ा कलंक है, जिससे मुक्त होने में भारत को लंबा वक्त लगेगा। काफी समय से भारत को एक सॉफ्ट स्टेट (कमजोर या पिलपिला राज्य) कहा जाता रहा है, जिसका अर्थ यह है कि संगठित अपराधों से सख्ती के साथ निपटने, दोषियों को अंजाम तक पहुंचाने की कोई परंपरा हमारे यहां नहीं बन पाई है। अफसोस कि इन तीनों हृदयविदारक घटनाओं में हमारी जांच एजेंसियों की नाकामी हमारी इस तकलीफदेह छवि को और मजबूत बनाएगी।

जीवन का अभिषेक

एक बार संत एकनाथ अपने शिष्यों के साथ काशी से रामेश्वरम की यात्रा पर जा रहे थे। उनके हाथ में कमंडल था, जिसमें गंगा-जल भरा हुआ था। गर्मी का मौसम था। मीलों तक पानी नहीं मिलता था। संत एकनाथ ने देखा कि एक गधा प्यास से तड़प कर मरने वाला था। उन्होंने पानी का कमंडल उसके मुंह में उड़ेल दिया। गधा प्यास बुझने के बाद उठकर खड़ा हो गया। शिष्यों ने जब यह देखा तो वो संत एकनाथ से बोले-यह आपने क्या कर दिया। अब भगवान शिव का अभिषेक कैसे होगा। एकनाथ जी बोले-अरे क्या तुमने नहीं देखा, स्वयं देवाधिदेव रामेश्वर (शिव) ही तो इस जीव के रूप में आए थे। कितने कृपालु हैं वे, स्वयं ही आ गए और हमें वहां तक जाने का कष्ट ही नहीं दिया। और अत्याचारियों का विध्वंश कर उन्हें दंडित करने के लिए शस्त्र उठाकर, हिसाब-किताब बराबर करने को तत्पर हुआ।

वास्तु टिप्स

दीवार पर टंगी घड़ी तय करती है आपका अच्छा और बुरा वक्त

घड़ियां ना ही सिर्फ हमें समय बताती हैं, बल्कि हमारे अच्छे-बुरे समय में भी योगदान देती हैं। जी हां, घर या ऑफिस में दीवार पर टंगी घड़ी आपके वक्त के बारे में बहुत कुछ कहती है। इन्हें अगर सही दिशा में लगाया जाए तो यह अच्छा समय लेकर आती हैं, वहीं गलत दिशा में लगी घड़ी आपके लिए बुरा वक्त ला सकती है। जानें क्या कहता है वास्तु घड़ियों के बारे में।कहते हैं घड़ी कभी किसी को तोहफे में नहीं देनी चाहिए। इसे तोहफे में देकर आप उसे अपना अच्छा और बुरा समय दोनों दे रहे हैं। जब हम ये गिफ्ट में देते हैं तो वह समय बंध जाता है, और वहीं सामने वाले के पास पहुंचता है।दक्षिण मुख सभी काम करने अशुभ माना गया है। घड़ी को भी कभी दक्षिणी दीवार पर नहीं लगाना चाहिए। क्योंकि दक्षिण यम की दिशा कही जाती है।फेंगशुई में कहा गया है कि इस दिशा में घड़ी लगाने से राह में अड़चनें आती है।

बंद हो बौद्धिक विलासिता का बिटकॉइन

भरत झुनझुनवाला

रिजर्व बैंक ने देश के बैंकों को आदेश दिया है कि इलेक्ट्रॉनिक करेंसी जैसे बिटकॉइन में वे व्यापार न करें। इस इलेक्ट्रॉनिक करेंसी का ईजाद कुछ लोगों ने यह सोच कर किया था कि सरकार द्वारा बनाई गई करेंसी के अतिरिक्त लेन-देन का कोई दूसरा माध्यम बनाया जाये। लेकिन रिजर्व बैंक के प्रतिबन्ध से यह स्पष्ट हो गया है कि सरकार के ऊपर होकर नहीं चला जा सकता। पहले यह समझें कि इलेक्ट्रॉनिक करेंसी क्या है? मान लीजिये एक कमरे के अन्दर 100 सुडोकू के खिलाड़ी अलग-अलग क्यूबिकल में बैठ जाते हैं और किसी सुडोकू का हल करने का प्रयास करते हैं। जो खिलाड़ी सबसे पहले सुडोकू को हल करता है, वह घोषित करता है और बाकी सभी 99 स्वीकार करते हैं कि उसने सबसे पहले उस सुडोकू को हल किया। ये 99 उसे एक बिटकॉइन इनाम स्वरूप दे देते हैं। यह बिटकॉइन सभी 100 खिलाड़ियों द्वारा सम्मिलित रूप से दिया जाता है और इसे उन सभी की मान्यता होती है। वे आपस में लेन-देन के लिये इस बिटकॉइन का उपयोग कर सकते हैं। एक सुडोकू हल हो जाने के बाद सभी खिलाड़ी इसमें एक नई लाइन या कुछ परिवर्तन करके और कठिन सुडोकू बनाते हैं। इस नये सुडोकू की फिर से प्रतियोगिता चालू होती है और जो खिलाड़ी इस नये सुडोकू को सबसे पहले हल कर दे, उसे पुनः इनाम स्वरूप एक बिटकॉइन दे दिया जाता है। इस प्रकार एक नई करेंसी प्रचलन में आ जाती है। इसी प्रकार कंप्यूटरों के खिलाड़ियों द्वारा बिटकॉइन बनाया जाता है। शुरू में दस कंप्यूटरों ने कोई पहेली बनाई और एक सुपर कंप्यूटर ने इस पहेली को आपस में जोड़कर सबसे ज्यादा कठिन पहेली बनाई। फिर दस कंप्यूटर चालकों ने इस कठिन पहेली को हल करने का प्रयास शुरू किया। इन दस कंप्यूटर चालकों में से, जिसने सबसे पहले उस पहेली को हल किया, उसने शेष सभी कंप्यूटरों को सूचित किया कि मैंने पहेली को हल कर लिया है। शेष कंप्यूटरों ने उसके द्वारा दिये गये हल को जांचा और सबने पाया कि हां यह पहेली वास्तव में हल हो गई है। सबने अपनी स्वीकृति दे दी।

सूखे के 900 साल

लेह-लद्दाख की त्सो-मोरीरी झील में पांच हजार साल पुरानी मिट्टी की तहों के जरिए मॉनसून पैटर्न्स का अध्ययन करने के बाद आईआईटी खड़गपुर के वैज्ञानिकों ने सिंधु घाटी सभ्यता के खत्म होने का विचित्र कारण बताया है। उनका कहना है कि लगभग 4350 साल पहले सिंधु घाटी में नौ सौ साल लंबा सूखा पड़ा था। ताज्जुब की बात है कि नौ सौ तो क्या, सौ-पचास साल लंबे सूखे का भी कोई जिक्र हमें किसी वेद-पुराण में नहीं मिलता। लेह-लद्दाख की झील में मौजूद मॉनसून के निशान बताते हैं कि इतनी लंबी अवधि तक उत्तर-पश्चिम हिमालय में बारिश न के बराबर हुई और इसके चलते पंजाब की जो नदियां पानी से भरी रहती थीं, वे सब सूख गईं। सिंधु घाटी की सभ्यता कभी इन्हीं नदियों से गुलजार रही होगी। मॉनसून की इस स्थायी बेरुखी के चलते सिंधु घाटी में बसे लोग पूरब की गंगा घाटी में और दक्षिण दिशा की ओर चले गए। आईआईटी खड़गपुर के भूविज्ञान और भूभौतिकी विभाग के वैज्ञानिकों ने पाया कि नौ सौ साल लंबा यह सूखा लगभग 2,350 ईसा पूर्व से शुरू होकर 1,450 ईसा पूर्व तक चला। दुख की इतनी लंबी अवधि की कोई थाह व्यास और वाल्मीकि जैसे हमारे महाकवि भी नहीं लगा पाए, जिनकी लिखाई भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में समादृत है। बताया जाता है कि महाभारत में जिस समय का जिक्र है, वह 3100 से 1200 ईसा पूर्व का है, पर इतने असहनीय सूखे का कोई जिक्र महाभारत में भी नहीं मिलता है। 1500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में रहे वैदिक काल की किसी ऋचा में भी इसकी कोई भनक नहीं मिलती है। वैज्ञानिकों की यह रिसर्च बीसवीं सदी में पेश की गई उस धारणा को भी सीधी चुनौती देती है कि 3300 ईसा पूर्व से 1700 ईसा पूर्व तक चली सिंधु सभ्यता का पराभव किसी दो सौ साल लंबे सूखे से हुआ था। जाहिर है, आईआईटी खड़गपुर के इस शोध को कड़ी कसौटियों पर परखा जाएगा। मसलन, यह सवाल भी उठेगा कि इतने लंबे सूखे के निशान दक्षिण-पश्चिम एशिया के बाकी भूगोल में क्यों नहीं दर्ज किए जा सके एक बात तो तय है।

खेल-तमाशा और सवाल-जवाब

आलोक पुराणिक

सवाल-इतना शूं-शां, फूं-फां और कहीं भी कोई रिकॉर्ड में गिनती नहीं। आईपीएल के रिकॉर्ड विश्व क्रिकेट के आधिकारिक रिकॉर्ड में नहीं रखे जाते। मतलब फिर आईपीएल का मतलब क्या है जवाब-यह सवाल बहुत खतरनाक सवाल है। संसद में विकट फूं-फां, शूं-शां होती है। ऐसा बवाल होता है कि ताकीद करनी पड़ती है कि कुछ भी रिकॉर्ड पर न जायेगा। हल्ला हंगामा कोई रिकॉर्ड नहीं, यह संसद में भी होता है और आईपीएल में भी। तो क्या फर्क पड़ता है। आईपीएल भी चल रहा है और संसद भी। सवाल- आईपीएल अगर क्रिकेट टूर्नामेंट है तो इसमें डांस क्यों होते हैं? जवाब-इस सवाल का जवाब अगर मोदी समर्थक शैली में दें तो यह होगा कि मोदीजी की नीतियों की सफलता से देश में खुशी का माहौल है। इसीलिए विदेशी डांसर नाच रही हैं, इसका मतलब है कि मोदी की नीतियों की सफलता की धमक विदेशों में भी पहुंच रही है। सवाल का जवाब अगर मोदी विरोधी शैली में दिया जाये तो जवाब यह है कि यह डांस राहुल गांधी की हाल की सफलताओं का सेलिब्रेशन है। केजरीवालजी इस डांस पर कुछ न बोलेंगे। वह सिर्फ माफी मांग लेंगे, डांस से भी और डांसर से भी। सवाल-यह तो कतई नेता वाला जवाब हो गया। सब कुछ बता भी दिया गया और कुछ भी नहीं बताया गया। यह बतायें कि आईपीएल नामक क्रिकेट टूर्नामेंट में डांस क्यों होते हैं जवाब-डांस का इस मुल्क में घणा महत्व है। राजनीतिक पार्टियों की रैलियों में जनता को रोके रखने के लिए डांस करवाये जाते हैं। जनता डांस देखने जाती है, नेता समझता है कि वह अति ही लोकप्रिय है। इसी तरह से आईपीएल के कई मैचों में पब्लिक डांस देखने चली जाती है। क्रिकेटर समझ सकते हैं कि क्रिकेट देखने आ रही है पब्लिक। इस तरह से कनफ्यूजन से सब खुश रहते हैं। संसद की कार्यवाही पिछले दिनों लगातार ठप रही। जनता का भरोसा संसदीय प्रणाली से उठता जा रहा है। संसद में कार्यवाही ठप हो जाये, फिर डांस चलते रहें तो जनता की लोकतंत्र में आस्था प्रगाढ़ हो जायेगी। बल्कि यह भी हो सकता है कि सांसद संसद का बायकाट ऑनलाइन कर दें, घर पर बैठे बैठे कि जाओ बायकाट। सवाल-यह तो संसद को लेकर बहुत नान सीरियस बात हो रही है। जवाब-वे भी तो इसे नान-सीरियसली लेते हैं। सवाल- आईपीएल खिलाड़ियों की टी शर्ट पर सैमसंग, सुजुकी नामक ब्रांडों के चिन्ह हैं। जबकि सैमसंग के देश दक्षिण कोरिया में और सुजुकी के देश जापान में तो क्रिकेट खेला ही नहीं जाता। जवाब-दरअसल अब क्रिकेट में क्रिकेट नहीं मनी खेला जाता है। कल मंगल ग्रह की कोई कंपनी इंडिया में आकर क्रिकेट खेलने लग जायेगी।

पराक्रमी परशुराम क्षत्रिय विरोधी नहीं थे

पराक्रम के प्रतीक भगवान परशुराम का जन्म 6 उच्च ग्रहों के योग में हुआ, इसलिए वह तेजस्वी, ओजस्वी और वर्चस्वी महापुरुष बने। प्रतापी एवं माता-पिता भक्त परशुराम ने जहां पिता की आज्ञा से माता का गला काट दिया, वहीं पिता से माता को जीवित करने का वरदान भी मांग लिया। इस तरह हठी, क्रोधी और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने वाले परशुराम का लक्ष्य मानव मात्र का हित था। परशुराम ही थे, जिनके इशारों पर नदियों की दिशा बदल जाया करतीं, अपने बल से आर्यों के शत्रुओं का नाश किया, हिमालय के उत्तरी भू-भाग, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, कश्यप भूमि और अरब में जाकर शत्रुओं का संहार किया। उसी फारस जिसे पर्शिया भी कहा जाता था, का नाम इनके फरसे पर किया गया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को आर्यन यानी ईरान के कश्यप भूमि क्षेत्र और आर्यक यानी इराक में नई पहचान दिलाई। गौरतलब है कि पर्शियन भाषी पार्शिया परशुराम के अनुयायी और अग्निपूजक कहलाते हैं और परशुराम से इनका संबंध जोड़ा जाता है। अब तक भगवान परशुराम पर जितने भी साहित्य प्रकाशित हुए हैं, उनसे पता चलता है कि मुंबई से कन्याकुमारी तक के क्षेत्रों को 8 कोणों में बांटकर परशुराम ने प्रांत बनाया था और इसकी रक्षा की प्रतिज्ञा भी ली थी। इस प्रतिज्ञा को तब की अन्यायी राजतंत्र के विरुद्ध बड़ा जनसंघर्ष कहा गया। उन्होंने राजाओं से त्रस्त ब्राह्मणों, वनवासियों और किसानों अर्थात सभी को मिलाकर एक संगठन खड़ा किया, जिसमें कई राजाओं सहयोग मिला। अयोध्या, मिथिला, काशी, कान्यकुब्ज, कनेर, बिंग के साथ ही पूर्व के प्रांतों में मगध और वैशाली भी महासंघ में शामिल थे जिसका नेतृत्व भगवान परशुराम ने किया। दूसरी ओर, हैहयों के साथ आज के सिंध, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, लाहौर, अफगानिस्तान, कंधार, ईरान और ऑक्सियाना के पार तक फैले 21 राज्यों के राजाओं से युद्ध किया। सभी 21 अत्याचारी राजाओं और उनके उत्तराधिकारियों तक का परशुराम ने विनाश कर दिया था, ताकि दोबारा कोई सिर न उठा सके। भगवान परशुराम को लेकर एक आम धारणा है कि वे क्षत्रियों के कुल का नाश करने वाले थे, जो पूरा सत्य नहीं है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भी भगवान परशुराम ब्रह्मक्षत्रियों वर्ण के हंता न होकर मात्र क्षत्रियों के एक कुल हैहय वंश का समूल विनाश करने वाले हैं।

स्वतंत्र-निष्पक्ष न्यायिक प्रक्रिया में बाधक

कठुआ सामूहिक बलात्कार और हत्याकांड तथा उन्नाव बलात्कार कांड को लेकर खबरों में सबसे आगे रहने की होड़ में पीड़िता की पहचान सार्वजनिक करने जैसे मुद्दे पर मीडिया, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, को एक बार फिर अदालत की फटकार सुननी पड़ी है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने कई मीडिया घरानों को तलब भी कर लिया है। बीते साल तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश जे.एस. खेहर ने आपराधिक मामले में संदिग्ध व्यक्तियों के मीडिया ट्रायल पर चिंता व्यक्त की थी। न्यायालय का मानना था कि पुलिस द्वारा मीडिया को जानकारी देने के बारे में दिशा-निर्देशों की जरूरत है क्योंकि मीडिया की खबरें कभी-कभी मुकदमे की स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच को प्रभावित करती हैं। यही नहीं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर संदिग्ध को दिखाये जाने से उसकी प्रतिष्ठा हमेशा के लिये खत्म हो जाती है। आखिर आपराधिक मामलों की रिपोर्टिंग करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतने और संदिग्ध व्यक्तियों के अधिकारों को ध्यान में रखने के लिये न्यायालय के कई फैसलों और न्यायिक निर्देशों के बावजूद ऐसी घटनाओं को क्यों बार-बार अधिक से अधिक सनसनीखेज बनाने की कोशिश की जाती है क्यों अपराध की जांच पूरी होने और आरोपियों पर मुकदमा चलने से पहले ही मीडिया उन्हें अपराधी घोषित करने का प्रयास करने लगता है क्या बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और ऐसे दूसरे अपराधों में तथ्यों की पुष्टि के बगैर ही उन्हें जनता के सामने लाकर समूची न्याय प्रशासन प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास तो नहीं किया जाता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में ग्राउंड जीरो से रिपोर्टिंग के मामलों में यह असंतुलन अक्सर देखा जा सकता है। ऐसे सवालों पर मंथन के दौरान न्यायालय की उस टिप्पणी पर भी गौर करना चाहिए, जिसमें कहा गया था कि मीडिया ट्रायल का मुद्दा किसी भी आपराधिक मामले की निष्पक्ष जांच और मुकदमे की सुनवाई से ही नहीं बल्कि आरोपी को संविधान के अनुच्छेद 21 में प्रदत्त जीने के अधिकार से भी जुड़ा है। बेहतर हो अगर ऐसी घटनाओं की खबरें देते समय संतुलन बनाये रखकर अदालत के आक्रोश से बचा जा सकता है। मई, 2015 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने बोफोर्स तोप सौदा दलाली कांड को मीडिया ट्रायल की उपज करार देकर मीडिया की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े किये थे। इसकी वजह दलाली कांड के सारे आरोपियों का आरोप मुक्त हो जाना था। पहले भी ऐसे कई मामलों में मीडिया पीड़ित की पहचान गुप्त रखने में विफल रहा है। संभव है कि स्थानीय स्तर राजनीतिक दल और कुछ नेता इसका राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास करते हों लेकिन इस तरह की रिपोर्टिंग देश में तनाव पैदा कर सकती है। कभी-कभी आपराधिक मामले, विशेषकर यौन हिंसा से संबंधित प्रकरण में मीडिया की जरूरत से ज्यादा दिलचस्पी या फिर इसे लेकर जन आन्दोलन कुछ हद तक कानून के विपरीत भूमिका में आ जाते हैं।

खाना-खजाना

ऐसे बनाएं स्वादिष्ट पोहा इडली

सामग्री- 1.5 कप इडली रवा, 1 कप महीन पोहा, 1 कप खट्टा दही, 1/2 टीस्पून ईनो पाउडर, स्वादानुसार नमक, इडली मोल्ड में लगाने के लिए तेल

विधि

पोहे को साफ करके दही में डाल कर भिगो दें। 10 मिनट के बाद पोहे को अच्छी तरह से मैश कर दें। इडली रवा को दही और पोहे के मिश्रण में मिला दें। थोड़ी देर में मिश्रण का सारा पानी सूख जाएगा, थोड़ा पानी मिलाकर इडली बैटर जितना गाढ़ा बैटर बना लें। इडली मोल्ड में तेल लगाकर उसे चिकना कर लें। बैटर में ईनो पाउडर मिलाएं। स्टीमर में पानी डालकर गर्म होने के लिए रख दें। इडली मोल्ड में मिश्रण डालकर स्टीमर में रख दें व 10-12 मिनट तक उसे पकाएं। थोड़ा ठंडा होने के बाद मोल्ड से निकालकर नारियल की चटनी और सांभर के साथ सर्व करें।